प्रवाह

अमर उजाला

नई दिल्ली ■ बृहस्पतिवार, 28 सितंबर 2017

निर्भीक पत्रकारिता का सातवां दशक

स्थापना वर्ष : 1948

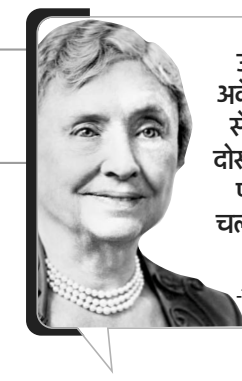

उजाले में अकेले चलने से अंधेरे में दोस्त का हाथ पकड़कर चलना बेहतर है

-हेलेन केलर

निरंकुश खिलाड़ियों को मैदान से बाहर करने के नियम समेत कुछ नए नियम क्रिकेट के इस खेल को अधिक प्रतिस्पर्धी और रोमांचक बनाएंगे, इसमें संदेह नहीं है।

क्रिकेट का रेड कार्ड

आज से शुरू हो रहे दो अंतरराष्ट्रीय टेस्ट सीरीजों में कुछ नियम ऐसे लागू किए गए हैं, जो न केवल क्रिकेट के इस खेल को थोड़ा और रोमांचक बना देंगे, बल्कि इनसे बल्लेबाजों और गेंदबाजों-दोनों के लिए कुछ नए किस्म की चुनौतियां पैदा होंगी। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में आज से जो सबसे बड़ा बदलाव आने जा रहा है, वह यह है कि अगर कोई खिलाड़ी मैदान में किसी पर भी हमला करता है या हमला करने की धमकी देता है, तो अंपायर के पास उसे पूरे मैच के लिए बाहर करने का अधिकार होगा। क्रिकेट में शुरू किए गए इस नए नियम को स्वाभाविक ही फुटबॉल के रेड कार्ड की तरह बताया जा रहा है, जिससे मैदान पर क्रिकेटरों के निरंकुश रवैये पर निश्चित तौर पर लगाम लगेगी। जेंटलमैन गेम कहे जाने वाले क्रिकेट में अगर इस नियम की शुरुआत की जा रही है, तो इसी से पता चलता है कि प्रतिस्पर्धा ने इस खेल को कहां पहुंचा दिया है। नए नियमों में बल्लेबाजों को कुछ मामलों में राहत दी गई है-जैसे, रन लेते हुए उसका बल्ला या शरीर क्रीज के अंदर हवा में है, तो वह रन आउट नहीं माना जाएगा। स्टम्प आउट के मामलों में भी यही नियम लागू होगा। जाहिर है, इस दोनों तरीकों से बल्लेबाज को आउट करना अब पहले से कठिन होगा। ऐसे ही बाउंडरी लाइन के नजदीक खड़ा फील्डर हवा में उछलकर कैच लेने की कोशिश करता है, तो गेंद से उसका पहला संपर्क बाउंडरी लाइन के अंदर होना चाहिए और इस दौरान उसका संपर्क बाउंडरी लाइन के बाहर किसी वस्तु या फील्डर से नहीं होना चाहिए, नहीं तो अंपायर बाउंडरी का इशारा करेगा। लेकिन बल्लेबाज का शॉट अगर मैदान में खड़े किसी के भी हेल्मेट से लगता है और उसे कैच कर लिया जाता है, तो बल्लेबाज आउट माना जाएगा। ऐसे ही बल्ले की लंबाई-चौड़ाई तय कर दिए जाने के बाद अब उसकी मोटाई भी तय कर दी गई है। नए नियम में गेंदबाजों पर भी बंदिश लगाई गई है। जैसे, गेंदबाज जान-बूझकर फ्रंटफुट नो बॉल डालता है, तो इसे खेल भावना के विपरीत मानकर उसे पारी के बाकी हिस्से में गेंदबाजी करने नहीं दिया जाएगा। इसी तरह एक से अधिक बार टप्पा खाकर बल्लेबाज के पास आने वाली गेंद अब नो बॉल होगी। डीआरएस तकनीक को ट्वंटी-20 मैच में लागू करने से क्रिकेट ज्यादा प्रतिस्पर्धी होगा, तो टेस्ट मैच में चार की जगह छह स्थानापन्न फील्डर नामित करने के नए नियम से उदारता की झलक मिलती है।

जापान से बढ़ती नजदीकी

आर्थिक और सामारिक कारणों के कारण भारत और जापान, दोनों के संबंध तो मजबूत हो ही रहे हैं, इन दोनों देशों के लिए बदलती भू-राजनीति में चीन से संबंधों के भी खास मायने हैं।

रुपकज्योति बोरा

जापान के प्रधानमंत्री के रूप में अपने पिछले कार्यकाल में शिंजो आबे ने अगस्त 2007 में ऐतिहासिक भाषण दिया था, जिसका शीर्षक था, महासागरों का मिलन। इसमें उन्होंने कहा था कि प्रशांत और हिंद महासागर अब स्वतंत्रता और समृद्धि के युग्म बनकर उभरेंगे। विगत एक दशक में जापान और भारत के बीच सौहार्द बढ़ा है, जोकि उससे पहले के दशकों में अन्यथा नजर नहीं आता था। दोनों देशों के बीच सदियों से ऐतिहासिक संपर्क होने के बावजूद उनमें दूरी बढ़ गई थी, क्योंकि 1947 में स्वतंत्रता मिलने के बाद भारत सोवियत संघ के करीब हो गया था और जापान अमेरिका का मजबूत सहयोगी बन चुका था। शीत युद्ध की समाप्ति और सोवियत संघ के विघटन के बाद ही नई भू-राजनीतिक सच्चाइयों के बीच भारत और जापान ने नए सिरे से अपने संबंधों को आगे बढ़ाने का फैसला किया।

लुक ईस्ट पॉलिसी इसी की परिणति थी, जिसे अब ऐक्ट ईस्ट पॉलिसी के नाम से जाना जाता है। इसका मकसद भारत द्वारा दक्षिणपूर्व एशिया तथा पूर्व एशिया के देशों से करीबी बढ़ाना है। उसके बाद से, 1998 के भारत द्वारा किए गए परमाणु परीक्षण की अवधि को छोड़ दिया जाए, तो दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंध आगे ही बढ़ते गए हैं। इस दौरान भारत के चीन से संबंधों का भी थोड़ा असर पड़ा है, लेकिन कुल मिलाकर नई दिल्ली और टोक्यो के करीब आने की दूसरी कई वजहें रही हैं।

दोनों देशों को करीब लाने के पीछे सबसे पहला कारण तो आर्थिक ही है। सालाना होने वाले द्विपक्षीय शिखर सम्मेलन के सिलसिले में हाल ही में भारत प्रवास पर आए आबे ने भारत के पहले हाई स्पीड रेलवे कॉरिडोर की आधारशिला रखी। इसका निर्माण अहमदाबाद और मुंबई के बीच बुलेट ट्रेन चलाने के लिए किया जाएगा। जापान के लिए भी यह बड़ा मौका है, क्योंकि वह अपनी शिनकेनसेन (बुलेट ट्रेन) प्रौद्योगिकी के लिए नया बाजार तलाश रहा है। हाल ही में उसे इंडोनेशिया में चीन से झटका मिला था। 2014 में जब भारतीय प्रधानमंत्री मोदी ने जापान की यात्रा की थी, तब टोक्यो ने भारत में 35 खरब येन के निवेश का वायदा किया था।

दोनों देशों के बीच सहयोग का दूसरा क्षेत्र असैन्य परमाणु ऊर्जा से जुड़ा है। भारत-जापान असैन्य परमाणु समझौता अस्तित्व में आ चुका है और यह दोनों देशों के बीच परस्पर विश्वास का प्रतीक है, जापान के लिए इसका खास महत्व है, क्योंकि दुनिया का वही एकमात्र ऐसा देश है, जिसने परमाणु बम के हमले की विभीषिका देखी है। दूसरी ओर भारत को अपनी आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था के लिए ऊर्जा के नए स्रोतों की जरूरत है, क्योंकि वह जीवाश्म ईंधन के बेतहाशा उपयोग के कारण पैदा हुई प्रदूषण की समस्या से जूझ रहा है। वहीं जापान के लिए इसका मतलब है कि परमाणु ऊर्जा क्षेत्र की उसकी कंपनियों के लिए बड़ा अवसर।

तीसरी बात, अमेरिका से मजबूत संबंध होने के बावजूद जापान नई साझेदारियां तलाश रहा है। असल में ट्रंप प्रशासन की अगुआई में अमेरिका ट्रांस-पैसिफिक पार्टनरशिप से अलग हो चुका है, जिससे जापान को नए सिरे से विचार करना पड़ रहा है। जैसा कि भारतीय सामरिक विशेषज्ञ सी राजा मोहन कहते हैं कि एशिया में अमेरिका की भविष्य की भूमिका को लेकर अनिश्चितता बढ़ रही है। इसके अलावा यह स्पष्ट दिख रहा है कि ट्रंप प्रशासन को उत्तर कोरिया नामक उलझन से निपटने के लिए चीन की मदद की जरूरत होगी, इसी वजह से जापान का एक वर्ग भारत को नए साझेदार के रूप में देख रहा है। इसी के साथ जापान और भारत को चीन से अच्छे रिश्ते रखना भी जरूरी है। विभिन्न मुद्दों पर भारत और चीन के बीच पर्याप्त सहयोग है। ये दोनों देश ब्रिक्स के सदस्य हैं और भारत एशियन इनफ्रास्ट्रक्चर इनवेस्टमेंट बैंक (एआईआईबी) के शुरुआती सदस्य देशों में से है इसके बावजूद इस वर्ष जून के मध्य में दोनों देशों के बीच तब तनाव पैदा हो गया था, जब चीन ने भूटान के दोकलम क्षेत्र में सड़क निर्माण शुरू किया था, जिसका भारत ने विरोध किया। हालांकि पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के कार्यकाल के समय दोनों देशों ने संयुक्त बयान जारी किया था कि चीन और भारत दोनों के विकास करने के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध हैं। दोनों देशों के बीच चीन का पहलू महत्वपूर्ण है और हम देखेंगे कि भारत और जापान के बीच रक्षा क्षेत्र में आने वाले समय में सहयोग बढ़ेगा। दोनों देशों के बीच जापान निर्मित यूएस2आई टोही विमान की खरीद के लिए बातचीत हो रही है, लेकिन आबे की हाल की भारत यात्रा के दौरान इस सौदे को अंतिम रूप नहीं दिया जा सका। इससे पता चलता है कि दोनों देशों को रक्षा क्षेत्र में सहयोग के लिए अब भी काफी कुछ करना है। 2016-17 में भारत-जापान का द्विपक्षीय व्यापार 13.61 अरब डॉलर था, जोकि एक वर्ष पहले की तुलना में 6.1 फीसदी कम है। दूसरी ओर तमाम तरह के राजनीतिक तनावों के बावजूद 2015 में भारत-चीन के बीच 70 अरब डॉलर का व्यापार हुआ।

जापान के लिए चीन का महत्व है, क्योंकि उत्तर कोरिया से सिर्फ इसी देश का संबंध है। हाल के महीनों में उत्तर कोरिया ने दो मिसाइल परीक्षण कर जापान के धैर्य की परीक्षा ली थी। ये दोनों मिसाइलें उत्तरी जापानी द्वीप होक्काइदो के ऊपर से गुजरीं। भारत और जापान को चीन से निरंतर संपर्क बनाए रखना चाहिए, क्योंकि ये दोनों देशों के हित में है। भारत के विदेश सचिव ने कुछ समय पूर्व कहा था, भारत और चीन को अपने मतभेदों को विवाद में बदलने की इजाजत नहीं देनी चाहिए। वहीं भारत और जापान के रिश्ते आर्थिक कारणों से मजबूत होंगे।

लेखक, नेशनल यूनिवर्सिटी सिंगापुर के विजिटिंग रिसर्च फैलो हैं

मेरी सबसे बड़ी विलासिता पांच सेंट का सिक्का

अंतर्ध्वनि

जे पी डॉनलीवि

मैंने कम उम्र से ही कविताएं लिखनी शुरू कर दी थी, लेकिन जब तक मैं डब्लिन के ट्रिनिटी कॉलेज नहीं गया, तब तक लेखक बनने की प्रेरक इच्छा नहीं जगी। पहले मैं पेंटिंग बनाया करता था और डब्लिन में मेरी पेंटिंग की तीन प्रदर्शनियां हुईं। लेकिन आयरिश कला जगत कमोबेश थका हुआ था, इसलिए मैं अपनी कुछ पेंटिंग लेकर लंदन गया। वहां मैं कई गैलरियों में गया। एक-दो गैलरी के मालिक मेरी पेंटिंग से प्रभावित भी हुए, लेकिन मेरे प्रसिद्ध नहीं होने के कारण उन्होंने इन्कार कर दिया।

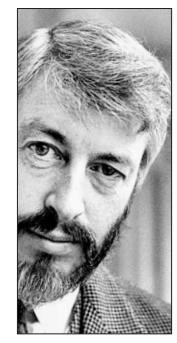

मैंने महसूस किया कि दुनिया से निपटने के लिए ऐसा कुछ लिखना जरूरी है, जिसे कोई रोक नहीं सकता। किताबें कहीं भी, हर किसी के हाथ में पहुंच सकती है। और फिर मैंने दुनिया को हिलाने वाला उपन्यास लिखने का फैसला कर लिया। पहले डेढ़ पन्ने लिखने में मुझे सात दिन लग गए। लेकिन मैंने छोड़ा नहीं, डटा रहा। फिर किताब का खुद-ब-खुद एक स्वरूप बनने लगा, जिससे मुझे उम्मीद जगी। फिर मैंने पहली किताब पूरी की। मेरी मां ब्रोंक्स में रहती थी, वहां मैंने काफी लिखा। मैंने बोस्टन के वेस्ट इंड में भी काफी लिखा, यह एक छोटी-सी जगह है, जिसे पोपलर स्ट्रीट कहा जाता है। बीकन हिल और चार्ल्स के पिछवाड़े में यह झुग्गी बस्ती थी। वहां एक जनरल हास्पिटल था। उन दिनों यह एक यहूदी बस्ती था, मैं वहां हफ्ते में ग्यारह डॉलर कमाने के लिए रहता था। मेरी सबसे बड़ी विलासिता पांच सेंट का सिक्का थी, जिससे मैं द न्यूयॉर्क टाइम्स खरीदता था, और सार्वजनिक पार्क में जाकर पढ़ता था। आयरिश-अमेरिकी उपन्यासकार

मंजिलें और भी हैं

>> शैलेश मिश्र

कॉरपोरेट की दुनिया छोड़ बुजुर्गों की देखभाल

मैं संयुक्त परिवार में पला-बढ़ा था। मेरे दादा जी ने आजादी की लड़ाई में हिस्सा लिया था। इसलिए समाज सेवा की भावना मुझे विरासत में मिली। दूसरों के हक के लिए लड़ते हुए मैं कई बार आक्रामक हो जाता था। हमारा अपना कारोबार था। पर मुझे लगता था कि मैं इस काम के लिए पैदा नहीं हुआ हूं। मेरी मां कहती थीं कि तुम कोई ऐसा काम करो, जो सार्थक हो। लेकिन नया कुछ करने के बजाय मैंने अपनी जाति से बाहर की एक लड़की से प्रेम विवाह कर लिया। परिवार के लोग मेरे इस फैसले से सहमत नहीं थे। नतीजतन मुझे घर छोड़ना पड़ा। हालत यह थी कि बाईस की छोटी उम्र में मुझे अपनी पत्नी की देखभाल करने के साथ-साथ नौकरी भी ढूंढनी थी। मुझे सेल्समैन की एक नौकरी मिली। मेरे जैसे विद्रोही और आंदोलनकारी आदमी को समय ने इस तरह पछाड़ दिया कि मैंने यही नौकरी कर ली। आखिर जीने का सवाल था। फिर मेरे कंधे पर जिम्मेदारी भी थी। मैं इतने दबाव में था कि पंद्रह साल तक मैंने वह नौकरी की और सेल्समैन से मार्केटिंग मैनेजर बन गया। लेकिन कॉरपोरेट दुनिया में पंद्रह साल गुजारने के बाद मेरा विद्रोही स्वभाव फिर से जोर मारने लगा था। लिहाजा मैं 'डिग्निटी फाउंडेशन' नाम की एक संस्था में वॉलंटियर बन गया। यह एक ऐसी संस्था थी, जो बुजुर्गों को सामाजिक मदद देती थी। लेकिन यह संस्था मुझे बड़ी जिम्मेदारी देना चाहती थी। उस संस्था ने मुझे मार्केटिंग मैनेजर की जिम्मेदारी सौंप दी। पिछली कंपनी में मेरा जो वेतन था, उसकी तुलना में मेरा वेतन 75 फीसदी कम था, पर इसका मुझे कोई मलाल नहीं था। उल्टे मुझे इस संस्था से जुड़कर खुशी हो रही थी। लोकल ट्रेन से घर लौटते हुए मैं मुस्करा रहा था और खुद से कह रहा था, यही तो मैं चाहता था। पत्नी को जब अपनी नई नौकरी और घटे वेतन के बारे में बताया, तो उसका जवाब था कि अगर तुम खुश हो, तो मुझे भी खुश रख पाओगे।

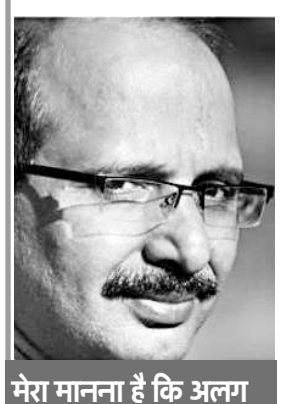

मेरा मानना है कि अलग ओल्ड होम के बजाय सोसाइटियों में ही बेसहारा बुजुर्गों के लिए अलग फ्लोर होने चाहिए।

बुजुर्गों के लिए काम करते हुए मुझे लगा कि ये लोग समाज के सबसे उपेक्षित समूह हैं। मैंने यह भी महसूस किया कि बच्चे अपने माता-पिता से प्यार तो करते हैं, लेकिन वे अपनी नौकरी, शिक्षा या अपने व्यक्तिगत जीवन से ही ज्यादा जुड़े हुए रहते हैं। ऐसे उपेक्षित बुजुर्गों से जुड़ी कई घटनाओं ने मुझे हैरान किया। उनमें से एक घटना का जिक्र जरूरी है। एक बुजुर्ग व्यक्ति की इलाज के दौरान एक नर्सिंग होम में मृत्यु हो गई। संयोग से मैं उसी नर्सिंग होम में अपनी संस्था के लिए काम कर रहा था। मैंने तत्काल उनके बेटे को फोन किया। दूसरी ओर से मुझे जो जवाब मिला, वह स्तब्ध कर देने वाला था। बेटा कह रहा था, 'ओह पिताजी मर गए! ओके, उनका अंतिम संस्कार कर दो।' हम उनका इंतजार करते रह गए, पर वह नहीं आए।

हमारी संस्था बेसहारा बुजुर्गों की हरसंभव देखभाल करती है। हम युवाओं को बताते हैं कि वे बुजुर्गों के प्रति संवेदनशील बनें, क्योंकि कुछ वर्ष बाद वे भी बुजुर्ग होंगे। दरअसल ओल्ड एज होम की बढ़ती संख्या बताती है कि नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी का ध्यान नहीं रखना चाहती। पर मैं मानता हूं कि ओल्ड होम बुजुर्गों को भीतर से तोड़ देते हैं, क्योंकि वहां वे एक अपरिचित दुनिया से रू-ब-रू होते हैं। ओल्ड होम के बजाय अगर हर सोसाइटी में कुछ फ्लोर बुजुर्गों के लिए रख दिए जाएं, तो वे शायद ठीक ढंग से रह सकें, क्योंकि वैसे में उन्हे परिवार के बीच रहने का एहसास होगा।

विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

लड़कियों को हदें बताने वाले

बीएचयू में लड़कियों ने सही नारे लिखे कि –*बेटी बचेगी, तभी तो पढ़ेगी* और *ताला नहीं लाइट चाहिए*, क्योंकि कैम्पस में जहां से लड़कियां गुजरती हैं, वहां अंधेरा छाया रहता है। इसके अलावा उन्हें हॉस्टल में सात बजे लौटने के लिए कहा जाता है।

क्षमा शर्मा

कुशीनगर में एक लड़के की छेड़खानी से तंग आकर एक लड़की ने जहर खाकर आत्महत्या करने की कोशिश की। कितना अफसोस है कि शायद उस लड़की की सुनने वाला कोई नहीं रहा होगा, तभी उसने मरना चाहा। हमारी लड़कियां अपने ही परिवार और समाज में इतनी अकेली क्यों हैं? खैरियत है कि समय पर इलाज मिलने के कारण वह बच गई। बाद में उसने बताया कि लड़का आते-जाते हर वक्त उसे तंग करता था। कहता था कि अगर तुम मेरी नहीं हो सकती, तो किसी और की भी नहीं हो सकती। मजेदार फिल्मी डायलाग है न। पुराने जमाने से हम सब औरतों ने कभी न कभी इसे सुना है। और आज तक इसे सुन रही हैं।

देखा जाए तो दलों के घोषणापत्रों में महिला सुरक्षा के दावे धरे के धरे रह गए। फिर नए दुष्कर्म कानून के अनुसार पीछा करना एक गंभीर अपराध है, मगर मान यह लिया गया है कि लड़कियां होती ही इसलिए हैं कि उनके प्रति कोई भी अपराध कर लो, बच सकते हो। प्रेम में अस्वीकार आखिर लड़कों को बर्दाश्त क्यों नहीं होता। पिछले ही दिनों अलीगढ़ में भाजपा की एक नेत्री एक लड़की को इसलिए पीटती दिखीं कि उसका दोस्त किसी और धर्म का था। इन महोदया ने सगर्व कहा कि वह आगे भी ऐसा करेंगी। कभी लव जेहाद, कभी किसी पार्क में बैठे होने पर युवा लड़के-लड़कियों की आजादी का निर्ममता से हनन किया जा रहा है। उच्चतम न्यायालय बेशक निजता को मौलिक अधिकार बताता रहे, लेकिन इसका हनन करने के लिए खलनायक-खलनायिकाएं मौजूद हैं।

दूसरी तरफ बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की लड़कियों ने सुरक्षा के लिए जब अपना आंदोलन शुरू किया था, तो अपनी आपबीती कई साइट्स पर लिखी थी। उन्होंने बताया था कि न केवल कैंपस में उन्हें छेड़खानी का सामना करना पड़ता है, बल्कि यदि कुलपति से शिकायत भी की जाए, तो कोई ध्यान नहीं दिया जाता। जब लड़कियों की नहीं सुनी गई, तो उन्होंने शांतिपूर्ण आंदोलन शुरू कर दिया। लड़कियों से अगर निपटना था, तो महिला पुलिस होनी चाहिए थी। बाद में कुलपति ने अपना बचाव करते हुए कहा कि आंदोलन में कुछ बाहरी असामाजिक तत्व आ घुसे थे। लेकिन कुलपति साहब यह तो बताइए कि एक लड़की ने जब खुद को छेड़े जाने की शिकायत की थी, तो आपने क्या किया। बताया तो जा रहा है कि आपके यहां महिलाओं के प्रति होने वाले यौन अपराधों के खिलाफ सुनवाई करने वाली यौन उत्पीड़न की सुनवाई करने वाली कमेटी तक नहीं है। लड़कियों ने सही नारे लिखे कि –*बेटी बचेगी, तभी तो पढ़ेगी* और *ताला नहीं लाइट चाहिए*, क्योंकि कैम्पस में जहां से लड़कियां गुजरती हैं, वहां अंधेरा छाया रहता है। इसके अलावा उन्हें हॉस्टल में सात बजे लौटने के लिए कहा जाता है। वह दस बजे तक खुलने वाली साइबर लाइब्रेरी का लाभ भी नहीं उठा सकती। यह मान लेना कि पुल्लिंगी सोच बचेगी, तभी संस्कृति बचेगी और उसे बचाने की सारी जिम्मेदारी कर्तव्यों के नाम पर औरतों और लड़कियों की पीठ पर कोड़े की तरह बरसती रहेगी, इसके दिन गए। नवरात्रि में नौ दिन लड़कियों के पांव पूजकर और साल भर उन्हें तरह-तरह के अपराधों और हिंसा का शिकार बनाकर अपनी ताकत को दिखाना और तालियां बटोरना अगर शोभा देता है, तो यह शोभा घृणा और जुगुप्सा पैदा करती है। आखिर हिंदी प्रदेश लड़कियों के प्रति बरते जाने वाले अपने पिछड़े सोच से मुक्त क्यों नहीं हो पाते। वे क्यों बार-बार लड़कियों और महिलाओं को अपने –अपने बाड़ों में कैद रखना चाहते हैं। इस तरह आप किसी को शारीरिक-मानसिक नुकसान तो पहुंचा सकते हैं, मगर उसका मन नहीं जीत सकते।

खुली खिड़की

सबसे स्मार्ट शहर

अर्थव्यवस्था, अंतरराष्ट्रीय पहुंच, शहरी नियोजन, पर्यावरण, तकनीक और यातायात जैसे पैमानों पर न्यूयॉर्क दुनिया का सबसे स्मार्ट शहर है। इस सूची में मुंबई शीर्ष भारतीय शहर है, जिसका वैश्विक स्थान 159वां है।

विभिन्न मानकों पर दुनिया के सबसे स्मार्ट शहरों का स्कोर

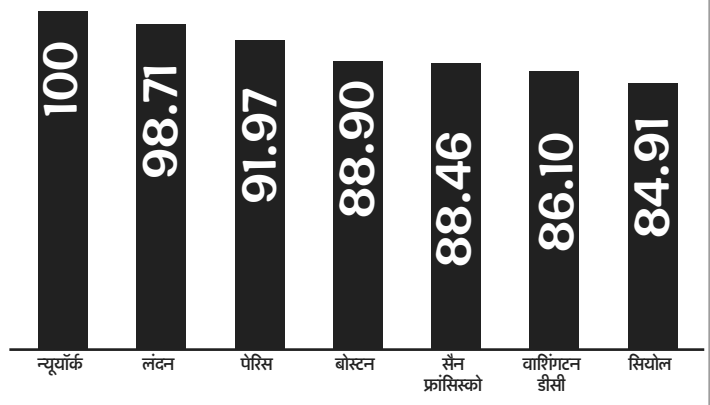

स्रोत- आईईएसई सिटीज इन मोशन इंडेक्स, 2017

सुगंध बिखर उठी

सत्संग

एक पादरी रोज समुद्र को आशीर्वाद देने के लिए जाता था। एक दिन उसने देखा कि कोई तरुण नाविक किसी जलपरी की लाश अपने बाहुपाश में कसे हुए समुद्र के तट पर मरा पड़ा है। यह दृश्य देखकर पादरी आशीर्वाद देना भूल गया। उसने क्रोध से झल्लाकर कहा, इस पवित्र स्थल से इन कलुष ग्रस्त लाशों को हटाओ और उन्हें मरघट के एक गंदे कोने में गाड़ दो। लाशें कूड़े के ढेर में गाड़ दी गई। वे सड़ गई और दो पुष्प गुल्मों के रूप में उगकर सारे मरघट को अपनी सुगंध से महकाने लगी। उस दिन गिरजाघर में उत्सव था। पादरी धूप और पवित्र जल छिड़क कर धर्मोपदेश देने में निमग्न था और यह बता रहा था कि पापियों पर स्वर्ग के पिता का शाप किस-किस तरह उतरता है। उस पादरी को यह तो याद ही नहीं रहा कि ईश्वर के स्वभाव में क्रोध नहीं है, उसके स्वभाव में तो प्रेम है-अनंत प्रेम। लेकिन वहां मौजूद भक्तों ने धर्मोपदेश पर कोई खास ध्यान नहीं दिया वे तो वेदी पर पड़े हुए पुष्पों की अलौकिक मादकता से उत्पन्न मस्ती में झूम रहे थे। पादरी ने एकाएक सेवकों से पूछा, ये फूल यहां किसने चढ़ाए? इतने सुगंधित फूल कहां से मिले? इस पर माली ने रुंधे हुए गले में कहा, कूड़े के ढेर में सड़ी मरघट की दो लाशों पर जो झाड़ उगे है, उन्होंने मरघट की तरह गिरजाघर को भी महका दिया है। यह सुनकर पादरी की आंखों से अश्रु बिंदु लुढ़क पड़े और पूजा की वेदी पर रखे उन पुष्पों पर बिखर गए।

मार्टिन लूथर किंग

हरियाली और रास्ता

आद्या, मोबाइल और उदासी

आद्या का नया मोबाइल चोरी हो चुका था, पर दुखी होने के बजाय उसने दोस्तों के साथ हंस-बोलकर समय बिताया

***आद्या** अपने दोस्तों के साथ दिल्ली के एक बड़े बाजार में घूम रही थी। दोस्तों ने आइसक्रीम ली और वहीं एक फुटपाथ पर बैठकर खाने लगे। उस दिन बाजार में काफी भीड़ थी और आद्या व उसके दोस्त मस्ती के मूड में था। कोई दस दिन पहले ही आद्या के जन्मदिन पर उसके माता-पिता ने उसे एक नया फोन दिया था। आद्या जैसे ही आइस्क्रीम खाकर उठी, उसने देखा कि*

उसकी जेब से मोबाइल गायब है। आद्या को काटो तो खून नहीं। उसके दोस्त भी यह सुनकर दुखी हो गए। वे सभी आसपास मोबाइल खोजने लगे। उनमें से किसी एक ने आद्या के मोबाइल पर कॉल भी किया, लेकिन वह ऑफ था। सबको समझ आ रहा था कि मोबाइल चोरी हो चुका है। वहीं पास में एक चने बेचने वाले ने बताया कि सुबह से यह दसवां मोबाइल होगा, जो गायब हुआ है। आद्या के सभी दोस्त बहुत परेशान हो गए। उन्होंने पास में ही कोतवाली में जाकर रिपोर्ट लिखाई। पुलिस वालों ने भी आकर उस पूरे इलाके में ढूंढा, लेकिन मोबाइल ऑफ होने की वजह से उसका मिलना बहुत मुश्किल था। आद्या के सभी दोस्तों का मूड काफी खराब हो गया था। एक दोस्त बोला, आज हम क्या मुंह लेकर वापस घर लौटेंगे। आद्या ने हंसते हुए जवाब दिया, मुंह तो सबके पास एक ही है। सारे दोस्त एकटक आद्या को देखने लगे। वे बोले, आद्या, ऐसे वक्त में भी तुम मजाक कैसे कर सकती हो? आद्या बोली, हमारे पास अब भी आधा दिन बाकी है। हम चाहें, तो उसे हंसते हुए बिता सकते हैं या दुखी होकर। आद्या का एक दोस्त बोला, लेकिन ऐसे में हम हंस कैसे सकते हैं? आद्या ने जवाब दिया, क्यों, न हंसने से मोबाइल वापस आ जाएगा क्या? जो होना था, वह हो गया। बेहतर होगा कि हम उसे एक सबक की तरह लेकर आगे के लिए सावधान हो जाएं। लेकिन उसके दुख में आगे आने वाला समय भी गंवा देना मेरी समझ में बेवकूफी है।

गलतियां सबसे होतीं हैं, लेकिन जो गलती करके भी आगे न बढ़े, वह बेवकूफ है।